ये अव्यक्त इशारे

सन्तुष्टमणि बन सदा सन्तुष्ट रहो और सबको सन्तुष्ट करो

11-12-2024

जो सेवा असन्तुष्ट बनाये वो सेवा, सेवा नहीं है। सेवा का अर्थ ही है मेवा देने वाली सेवा। अगर सेवा में असन्तुष्टता है तो सेवा छोड़ दो लेकिन सन्तुष्टता नहीं छोड़ो। सदा हद की चाहना से परे, सम्पन्न रहो तो समान बन जायेंगे।

Be a jewel of contentment, always remain content and make everyone content.

Any service that makes you discontent is not service. Service means something that gives you nourishing fruit. If there is discontentment in service, then leave that service, but never let go of your contentment. Always remain beyond any limited desires and always remain full and you will become equal.